स्वागत-प्रवचन

कठुआ (जम्मू-कश्मीर) १९-९-'५९

सनातनो नित्य-नूतनः

आप सब लोगों के दर्शन से मुझे बड़ी खुशी होती है और उस दर्शन से मुसाफिरी की थकान मिटती है। आठ साल से हमें हर रोज यह नित-नया आनन्द हासिल हो रहा है। जैसे सूर्यनारायण रोज उगता है तो वह पुराना होने पर भी पुराना नहीं होता है। रोज उसकी तस्वीर खींची जाय तो नयी तस्वीर मिलेगी। वैसे ही हमें भी रोजन या स्थान, नया मकान मिलता है। हवा, पानी, कुदरत सब नया मिलता है।

नित-नया जीवन

हम रोज के जीवन में ताजगी महसूस करते हैं और हमें बुढ़ापा आता ही नहीं, बल्कि हमें लगता है कि हम सनत्कुमार के जैसे हैं, कायम के लिए कुमार हैं। शुरुआत में हम जो आनन्द महसूस करते थे, उससे कम आनन्द आज नहीं है। जिंदगी में मनुष्य ताजगी का एहसास खो बैठेगा तो उसे जिंदगी दूभर होगी, बोझ होगी, उसका मजा नहीं रहेगा। चाहे मनुष्य जीये तो भी उसकी जिन्दगी में खुशबू नहीं रहेगी। जिस क्षण मनुष्य महसूस करेगा कि मैं पुराना हो गया, उस क्षण वह मर ही गया, ऐसा समझो, भले ही उसका जिस्म कायम रहे। वही मनुष्य सचमुच में जीता है, जो हर क्षण नया जीवन जीता है, प्रतिक्षण नया आनन्द लेता है।

बच्चे जैसा उत्साह

बच्चे ने कोई नयी चीज देखी तो उसे बड़ी खुशी होती है। पहाड़, पेड़, चिड़िया हर चीज देखकर वह खुश होता है, बच्चा रो रहा है। माँ उसका रोना बंद करना चाहती है, लेकिन वह चुप नहीं होता है तो फिर माँ कहती है, चिड़िया देख। बच्चा उसकी तरफ देखता है और उसका रोना बंद हो जाता है। चिड़िया में जो चैतन्य है, उसका उसे आकर्षण होता है। जिसका जीवन पुराना हो गया, उसे सृष्टि में वही-वही चीज दिखाई देती है। वही पहाड़, वही पेड़, वही आसमान, वही मकान, वही जानवर, यह सब देखकर वह ऊब जाता है और उसे उत्साह नहीं मालूम होता है। बच्चे में जो उत्साह होता है, वही उत्साह मरने के दिन तक बना रहा तो हमारी जिन्दगी में खुशबू, आनन्द रहेगा।

नित्य नयापन

यह जो नित्य नयापन है, वह आत्मा का लक्षण है। हमारे यहाँ एक शब्द चलता है, सनातन धर्म, लेकिन सनातन की व्याख्या यह की गयी है कि "सनातनो नित्य-नूतनः" सनातन याने नित्य नूतन। सृष्टि में जो नित्य नयापन है, वही हम अपने जीवन में महसूस करेंगे तो सृष्टि के साथ एकरूप हो सकेंगे। लेकिन नित्य नया जीवन उसी को मिलेगा, जो नित्य निरन्तर ज्ञान प्राप्त करेगा। जैसे हम हर रोज खाते हैं, वैसे क्या हर रोज नया ज्ञान प्राप्त करते हैं? कुछ लोग समझते हैं कि मैट्रिक या बी० ए० पास करके नौकरी में लगे तो अब कुछ नया ज्ञान हासिल करने का नहीं है। लेकिन समझना चाहिए कि बी० ए० पास किया याने ज्ञान-समुद्र को पार नहीं किया, बल्कि तैरना सीखा। जिसने युनिवर्सिटी की डिग्री हासिल की, उसने ज्ञान नहीं हासिल किया, बल्कि ज्ञान पाने की शक्ति हासिल की। अब उस शक्ति से वह ज्ञान पा सकता है। बच्चे को वह शक्ति हासिल नहीं थी। माता-पिता और गुरु की मदद के बिना वह ज्ञान हासिल नहीं कर सकता था। लेकिन अब उसे सर्टिफिकेट मिला याने ज्ञान पाने की शक्ति हासिल हुई। लेकिन जहाँ सर्टिफिकेट मिला, वहाँ उसने ज्ञान पाना छोड़ दिया। अगर कोई पुराने सरमाये (पूँजी) पर तिजारत करता रहे, उस सरमाये में इजाफा न करे तो उसके धंधे में गिरावट आयेगी। उसी तरह हमने पुराना ही ज्ञान कायम रखा। नया ज्ञान हासिल नहीं किया तो हम जीये ही नहीं, ऐसा समझना चाहिए।

नाक में साँस चलती है तो मनुष्य जीता है, यह कहना ठीक नहीं है। लुहार के भाते में भी साँस चलती है, जैसे हम रोज खाते हैं और उससे खून में रोज नया-नया रस आता है, उसी तरह ज्ञान पाने की क्रिया रोज चलनी चाहिए। रोज खाने से और सोने से शरीर में ताजगी रहती है। उसी तरह जिस दिन हमने ज्ञान नहीं पाया, वह दिन नीरस, शुष्क हो जायगा। भगवान ने ज्ञान सुनने के लिए कान दिये हैं, पढ़ने के लिए, देखने के लिए आँख दी है और चिन्तन, मनन करने के लिए मन दिया है। जैसे हम केला खाते हैं तो उसमें से जिस चीज का रस बनाना है, उसका रस बनाते हैं, उसे हजम करते हैं और जो चीज फेंकनी है, उसे फेंकते हैं, वैसे ही हम जो पढ़ेंगे, सुनेंगे, उसमें से अच्छा हिस्सा जज्ब कर लेंगे, खराब हिस्सा छोड़ देंगे। तब वह चीज अपनी बन जायगी और उससे जीवन में ताजगी रहेगी। हर रोज सोने से पहले हमें सोचना चाहिए कि आज हमने अपनी पूंजी बढ़ायी या नहीं?

जैसे रोज ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, वैसे ही रोज कुछ न कुछ सेवा भी करनी चाहिए। अगर हम इन्सान होकर भी अपने लिए ही जीयें, दूसरों के लिए कुछ न करें तो समझना चाहिए कि हमारा आज का दिन जानवर का जीवन जीने में गया। अगर हमने ऐसी सेवा की कि जिसमें बदला चाहा तो समझना चाहिए कि हमने अच्छी रसोई बनाकर उसमें जहर मिलाया। इन दिनों सेवा तो चलती है, लेकिन उसमें जहर मिलाया जाता है। सेवा करने में नाम, कीर्ति, पद आदि का खयाल रहता है। इस जिन्दगी में नहीं तो मरने के बाद स्वर्ग में हमारी सीट रिजर्व रहे, यह खयाल रहता है। इस तरह अपने लिए कुछ कमाने के खयाल से सेवा की गयी तो सेवा का आनन्द, आत्म-समाधान चला जाता है। इसलिए हमारे हाथ से रोज ऐसी सेवा हो, जिससे कुछ पाने की इच्छा न हो तो हमारी जिंदगी में ताजापन रहेगा। इस तरह रोज ज्ञान प्राप्त करने से और निष्काम सेवा करने से बच्चे की जिन्दगी में जो रस, ताजगी है, वही हमारी जिन्दगी में बुढ़ापे तक रहेगी। ◆◆◆

अनुक्रम

१. 'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' की ओर.
जम्मू-कश्मीर २० सितम्बर '५९ पृष्ठ ७०७
२. सनातनो नित्य-नूतनः
कठुआ १९ सितम्बर '५९ ,, ७१०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in